NJESR/April 2022/Vol-4/Issue-4 **E-ISSN-2582-5836**

DOI-10.53571/NJESR.2022.4.4.52-55
{Received:20 March 2022/Revised: 10 April 2022/Accepted: 22 April 2022/Published: 28 April 2022}

"सुभाष चन्द्र बोस के जीवन परिचय और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में भुमिका"

आशीष कु० ठाकुार

अतिथि शिक्षक (इतिहास विभाग)

डॉण एल. के. भी. डी. कॉलेज ताजपुर, समस्तीपुर

Email- kumarashishdmk123@gmail.com

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान करने वाले प्रमुख नेताओं में सुभाष चन्द्र बोस का नाम बड़े गर्व के साथ लिया जाता है।

इनका जन्म **23** जनवरी **1897** को उड़ीसा के कटक शहर में हिन्दु कायस्थ परिवार में हुआ था। इनके पिता जी का नाम जानकी बोस एवं माँ का नाम प्रभावती था। इनके पिताजी सरकारी वकील थे अंग्रेजी सरकार ने उन्हे रायवहादुर का खिताब दिया था।

कटक के प्रोटेस्टेण्ड स्कुल से प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर **1909** ई० में उन्होने रेवेनशा कॉलेजियट स्कुल मे दाखिल लिया। मात्र पन्द्रह वर्ष की आयु में बोस ने विवेकानन्द साहित्य का पूर्ण अध्ययन कर लिया था। **1916** में दर्शन शास्त्र से बी. ए. आनर्स की परीक्षा पास कर **49** वी बंगाल रेजीमेण्ट में भर्ती के लिए परीक्षा दी किन्तु आंखे खराब होने के कारण उन्हे सेना के लिए अयोग्य घोषित कर दिया। बोस काफी उदास हुए परन्तु उनके पिता की इच्छा थी सुभाष आई सी एस बनें किन्तु उनकी आयु को देखते हुए यह परीक्षा केवल एक ही बार मे पास करनी थी। उन्होने परीक्षा देने का फैसला किया और **15 sep 1919** को ईंग्लैण्ड चले गए परीक्षा की तैयारी करने के लिए लंदन में मानसिक एवं नैतिक विज्ञान की आनर्स में दाखिल किए जहॉ उन्हे रहने और खाने की व्यवस्था मिल गई, बोस का लक्ष्य आई सी एस पास करना था और उनके कड़ी मेहन और लगन से आई सी एस की परीक्षा में चौथे स्थान पर उत्तीर्ण होकर अपना नाम रौशन किया।

1920 में वह भारतीय जनपद सेवा **(I.C.S.)** परीक्षा में सफल होकर यथायोग्य पद पर कार्य करने लगे परन्तु अगले वर्ष ही इस सेवा से त्यागपत्र देकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के असहयोग आंदोलन मे सम्मिलित हो गए। **Dec 1921** में उन्हे **6** मास का कारावास का दण्ड दिया गया। वह ग्यारह वार अपनी राजनीतिक गतिविधियों के लिए जेल गए। बोस देशबंधु चित्तरंजन दास के प्रभाव से काफी प्रभावित थे और शीघ्र ही उनके सबसे अधिक विश्वस्त प्रतिनिधि और दाहिना हाथ बन गए।

1923 ई० में उन्होने 'स्वराज' दल' के गठन तथा कार्यक्रम का समर्थ किया। उनका विचार था कि अंग्रेजो का विरोध भारतीय विधान परिषदों के अंदर से भी होना चाहिए। **1924** ई० जब **C.R.** दास कलकत्ता निगम के महापौर बने और बोस निगम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त किए गए। अक्टूबर **1924** में बंगाल सरकार ने उनकी राजनैतिक गतिविधियो के लिए उन्हे बंदी बना लिया तथा उन्हे वर्मा के सुप्रसिद्ध नगर मांडले मे तीन वर्ष के लिए निर्वासित कर दिया।

जवाहर लाल नेहरू के साथ सुभाष ने कांग्रेस के अन्तगर्त भुवकों की इण्डिपेण्डेंस लीग शुरू की। **1927** ई० में जब साइमन कमीशन भारत आया तब कांग्रेस ने उसे काला झण्डा दिखाये। कोलकत्ता में सुभाष ने इस आंदोलन को नेतृत्व किया। साइमन कमीशन को जबाब देने के लिए कांग्रेस ने भारत की भावी संविधान बनाने का काम आठ सदस्यीय आयोग को सौपा। मोतीलाल नेहरू इस आयोग के अध्यक्ष एवं सुभाष उसके एक सदस्य थे। **1928** में कांग्रेस की वार्षिक अधिवेशन में मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता मे कलकत्ता में हुआ, इसमें सुभाष खाकी गणवेश धारण करके नेहरू को सैन्य तरीके से सलामी दी।

26 जनवरी **1931** को कोलकत्ता मे राष्ट्र ध्वज फहराकर सुभाष एक विशाल मोर्चे का नेतृत्व कर रहे थे। **1934** ई० में सुभाष चन्द्र बोस एक युरोपियन महिला एथिली शैकल से प्रेम विवाह किया जिनसे एक पुत्री का जन्म हुआ। उन्होने उसका नाम अनिता बोस रखा।

सुभाष चन्द्र बोस एवं कांग्रेस

1938 ई० में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हरिपुरा में तय हुआ इसमें गांधी जी ने सुभाष को अध्यक्ष पद के लिए चुना। अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में इन्होने 'योजना आयोग' की स्थापना की। इसके प्रथम अध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू बने। सुभाष ने बंगलोर के प्रसिद्ध वैज्ञानिक विश्वसरैय्या की अध्यक्षता मे एक विज्ञान परिषद की स्थापना की। इसी दौरान यूरोप मे द्वितीय विश्व युद्ध के बादल छा गए थे। बोस चाहते थे कि ब्रिटेन की कठिनाईयों का लाभ उठाकर स्वतंत्रता संग्राम को तीव्र किया जाय, उन्होने अपनी कार्य अवधि में अन्य ज्वलंत नेतृत्व किया लेकिन गांधीजी इनके कार्य पद्धति से खुश नही थे।

1939 में गांधी जी ने कांग्रेस का अध्यक्ष पद के लिए पट्टाभि सीता रमैय्या को चुना लेकिन अन्य सदस्यों को बोस ही अध्यक्ष बनाना चाहते थे। सहमति न होने पर चुनाव का सहारा लिया गया जिसमे बोस, पट्टाभि सीतारमैय्या से **203** मतो से विजयी रहा। गांधीजी इस हार को अपना हार माना परन्तु आपसी मतभेद को ध्यान में रखते हुए बोस ने स्वयं अप्रैल **1939** कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया।

'स्वतंत्रता संग्राम में बोस की भुमिका'

बोस ने **1939** में सर्वप्रथम 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना की। साथ ही घोषणा कि फॉरवर्ड ब्लॉड अपने दम पर ब्रिटिश राज के खिलाफ युद्ध करेगा। अंग्रेजी सरकार ने सुभाष सहित अन्य मुख्य नेताओं को कैद कर लिया। सरकार ने बोस को उनके ही घरो मे जनरबंद करके पुलिस के कड़ा पहरा लगाया।

नेता जी पुलिस को चकमा देकर **1941** में एक पठान का वेष में घर से निकले। गोमो रेलवे स्टेशन धनवोद से ट्रेन पकड़ कर पेशावर गए। वहाँ से अफगानिस्तान की राजधानी काबुल मे बोस इटालियन दुतावास प्रवेश करने में सफल रहे और उनके सहयोग से इटालियन व्यक्ति बनकर सुभाष काबुल से निकलकर रूस (मास्को) और जर्मनी (बर्लिन) पहुचे। सुभाष जर्मनी के सर्वोच्च नेता एडॉल्फ हिटलर से मिले लेकिन हिटलर को भारत के विषय मे विशष रूचि नहीं थी। उन्होने सुभाष को सहायता करने का कोई स्पष्ट वचन नहीं दिया।

जुलाई **1943** में वह सिंगापुर पहुँचे जहॉ रास बिहारी बोस द्वारा बनाई गई स्वतंत्रता लीग के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। बोस ने सुप्रसिद्ध भारतीय राष्ट्रीय सेना का गठन किया जिसमें उन्होने भारतीय सेना के उन सैनिको को सम्मिलित किया जो सिंगापुर तथा मलेसिया से अंग्रेजो के भागने के समय जापान द्वारा युद्ध बंदी बनाये गए थे।

Oct 1943 मे बोस सिंगापुर मे 'स्वाधीन भारत की अन्तरिम सरकार' की स्थापना कर खुद इस सरकार के युद्ध मंत्री बने। इस सरकार को कुल नौ देशो ने मान्यता दी। आजाद हिंद फौज ने महिलाओं के लिए झांसी की रानी रेजीमेंट भी बनाये थे, जिसमें बहुत सी क्रांतिकारी महिलाओं ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। अंतरिम सरकार के मुख्य सेनापति के पद पर शपथ लेते हुए घोषणा किया– "मै सुभाष चन्द्र बोस ईश्वर की पवित्र सौगन्ध खाकर कहता हुँ कि मैं, भारत तथा उसके **38** करोड़ वासियों की स्वतंत्रता के लिए अपने अंतिम साँस तक युद्ध करता रहुँगा।" उन्होने अपने आहवान मे यह संदेश भी दिया– तुम मुझे खुन दो, मै तुम्हे आजादी दुँगा।

द्वितीय विश्व के दौरान आजाद हिंद फौज ने जापानी सेना के सहयोग से भारत पर आक्रमण किया। अपनी फौज को प्रेरित करने के लिए उन्होने 'दिल्ली चलो' का नारा दिया।

जपानी सैनिक कमान के सहयोग तथा सहायता से अंग्रेजो से इंडमान एवं निकोबार द्वीप जीत लीए। बोस ने इन द्वीपों को 'शहीद एवं स्वराज द्वीप' का नाम दिया।

1944 में इम्फाल एवं कोहिमा पर आक्रमण किया परन्तु द्वितीय विश्व युद्ध में जपान की हार की स्थिति को देखते हुए सेना को पीछे हटना पड़ा। जुलाई **1944** को आजाद हिंद रेडियो पर अपने भाषण के माध्य से गांधी को सम्बोधित करते हुए बोस ने उन्हे राष्ट्रपिता कहा तभी गांधीजी ने भी उन्हे नेता जी कहे थे।

द्वितीय विश्व युद्ध मे जापान की हार के बाद नेता जी सिंगापूर से जापान की ओर हवाई जहाज से मंचुरिया की तरफ जा रहे थे और कहा जाता है कि फारमोसा में एक वायुयान दुर्घटना में **Aug 1945** को उनकी मृत्यु हो गई।

अंग्रेजी सरकार ने आजाद हिंद फौज के गिरफ्तार अफसर मेजर शाहनवाज खां, कर्नल प्रेम सहराल एवं गुरू दयाल सिंह पर **1945** में दिल्ली के लाल किले मे मुकदमा चलाया। राष्ट्रीय कांग्रेस ने भारतीय जनता की ओर से इनके पक्ष में मुकदमा लड़ने का फैसला किया। भोलाभाई देसाई

के नेतृत्व मे तेह बहादुर सफ्र, अरूणा आसफ अली, नेहरू आदि ने आदालत में बहस की।

पं० नेहरू ने **40** वर्ष बाद बैरिस्टर का चोगा पहला था। मुकदमा बड़े सनसनी पूर्ण वातावरण में आरम्भ हुआ। हजारो व्यक्ति भीड़ के रूप में बाहर खेड़े रहे और 'जय हिंद' के नारो से आकाश गुंजता रहा। तीनों को मृत्यु दण्ड दिया गया था परन्तु भारतीय जनता की भावना को देखते हुए वायसराय लॉर्ड वैवेल **(1944-47)** ने क्षमा प्रदान की।

1945-46 ही दमदम हवाई अड्डे पर हवाई सैनिको ने विद्रोह कर दिया। बम्बई मे नौ सैनिको ने विद्रोह हर दिया। सरकार ने **16 Aug. 1946** को प्रत्यक्ष कार्यवाही नीति को अपनाया। सैनिक विद्रोह इस बात का प्रमाण थे कि भारतीय सेना भी अंग्रेजी प्रमुख मे रहने को तैयार नही था। इन विद्रोहों से अंग्रेजो के सम्मान को गहरा धक्का लगा था। जनता तो उन्हे पहले ही खदेड़ना चाहती थी अब सेना भी बागी होती जा रही थी।

अतः हम कह सकते है कि दिल्ली के लाल किला में जय हिन्द की गुंज से आकाश गुंजना और अब सेनाओं का बागी होना। ये सभी नेताजी के दृढ़तो और देश भक्ति का उप्साह था जो भारतवासी और सेना भी अनुसरण कर रहे थे। वह युवकों तथा राष्ट्रवादियों के लिए प्रकाश–स्तम्भ थे। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में उनका नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. एम. एस. त्यागी – 'आधुनिक भारत' – पृ० – **182-83**
2. ग्रोवर, बी, एल – आधुनिक भारत का इतिहास, एस चन्द पब्लिकेशन दिल्ली
3. चन्द्र विपिन – भारत का स्वतंत्रता संघर्ष – पृ० – **167-168**
4. वरूण दे, डॉ नीनानाथ – आधुनिक भारत – पृ० – **477**
5. जैन डॉ पुखराज – भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास पृ० सं०– **218-19**
6. महाजन, वी. डी. – आधुनिक भारत का इतिहास
7. शर्मा, एल. पी. – आधुनिक भारत – पृ० – **454**